2 अप्रैल 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महाविद्यालय के आदर्श पुरस्कारों की घोषणा

अच्युतकांत जैन

सोमिल जैन

अमन जैन

चर्चित जैन

सौरभ जैन

शुभम हाथगिने

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 मार्च को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के अन्तिम वर्ष के छात्रों के विदाई समारोह के अन्तर्गत महाविद्यालय के इस सत्र (2014-15) के विशिष्ट पुरस्कारों की घोषणा की गई।

इस अवसर पर विद्यालय की पाँचों कक्षाओं में आदर्श कक्षा का पुरस्कार **उपाध्याय वरिष्ठ** कक्षा को तथा आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार **अच्युतकांत जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष)** को दिया गया। इसके अतिरिक्त कक्षा के आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से **सोमिल जैन दलपतपुर**, उपाध्याय वरिष्ठ से **अमन जैन दिल्ली**, शास्त्री प्रथम वर्ष से **चर्चित जैन खनियांधाना**, शास्त्री द्वितीय वर्ष से **सौरभ जैन 'फूप'** और शास्त्री तृतीय वर्ष से **शुभम हाथगिने हुपरी** को पुरस्कृत किया गया।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं पंचमेरु-नंदीश्वर विधान संपन्न

पोन्नूरमलै (तमिलनाडु) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर में श्री पंचमेरु-नंदीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में आध्यात्मिक चर्चा के अतिरिक्त ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। कार्यक्रम में लगभग 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

समापन के अवसर पर श्री अनंतराय ए.शेठ एवं श्रीमती कनकबेन शेठ मुम्बई ने सभी साधर्मियों को मंगल वाणी सी.डी. प्रदान की। विधान के समस्त कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री ने संपन्न कराये। **- राजीव जैन**

चलो मेरठ ! चलो मेरठ !! चलो मेरठ !!! चलो मेरठ !!!! चलो मेरठ

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 24 मई से 10 जून 2015

प्रशिक्षण पाइये : अपनों को पढाइये

प्रशिक्षण पाइये : बच्चों को पढाइये

आप भी आइये : औरों को भी लाइये

यदि अभी नहीं तो कब ?

क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चे भी आपके ही समान संस्कारी और धर्मात्मा बनें, शाकाहारी रहें, व्यसन रहित, सात्विक और गौरवशाली जीवन जीयें और कुसंगति से बचें ?

मात्र 18 दिनों में प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने नगर में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन कीजिये, बच्चों में धार्मिक संस्कारों का सिंचन कीजिये, उन्हें जैनधर्म का प्राथमिक ज्ञान दीजिये। यह उनके जीवन को सात्विक और वैभवशाली बनायेगा, उन्हें कुसंगति और बुरी आदतों से दूर रखेगा। (आवास एवं भोजन व्यवस्था नि:शुल्क)

नि:शुल्क मंगवा लें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर तथा पताशे प्रकाशन संस्था घटप्रभा (बेलगांव-कर्नाटक) द्वारा प्रकाशित **गुणस्थान विवेचन** (280 पृष्ठ), **जीव जागा-कर्म भागा** (190 पृष्ठ) एवं श्रीमती कस्तूरी देवी पुगलिया की स्मृति में श्री जुगराजजी पुगलिया सरदारशहर की ओर से **मोक्षमार्गप्रकाशक** - ये तीनों पुस्तकें स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट दी जा रही है। मात्र एक पोस्टकार्ड द्वारा अपनी इच्छित पुस्तक हेतु अपना पूर्ण पता पिनकोड सहित प्रेषित करें, साथ ही अपना संपर्क नम्बर भी देवें। डाक व्यय भी संस्था द्वारा ही वहन कर पुस्तकें आपको भेज दी जायेगी। ध्यान रहे पोस्टकार्ड ही लिखें, ई-मेल, एस.एम.एस. न करें। दिनांक 31 मई तक प्राप्त होने वाले पोस्टकार्ड के आधार पर 10 जून 2015 से पुस्तकें डिस्पेच करना प्रारम्भ किया जायेगा।

- नि:शुल्क वितरण विभाग, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.)

सम्पादकीय -

अध्यापक की भूल से राष्ट्रहानि

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि उसका मित्र विज्ञान अपने पिता सेठ लक्ष्मीकांत की मृत्यु के बाद उस नव स्थापित आदर्श शिक्षा संस्थान का अध्यक्ष बन गया था। अत: यदि ज्ञान चाहता तो विज्ञान से कहकर एक-एक अध्यापकों की असलियत का भंडाफोड़ करके उन्हें मनचाहा दण्ड दिला सकता था; पर वह इस बारे में विज्ञान की पुरानी मित्रता का लाभ नहीं उठाना चाहता था, इसकारण चुप रहता था।

पर, विद्यार्थी अवस्था में उसने ''वर्तमान शिक्षा-पद्धति के गुण-दोष एवं वर्तमान शिक्षा नीति में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता'' जैसे विषयों पर हुई भाषण एवं निबन्ध प्रतियोगिताओं में भाग लिया था। इस कारण उसका इस विषय पर गहन चिन्तन था और पतनोन्मुख संस्थान को पुन: प्रगतिशील बनाने की योजना भी उसके मस्तिष्क में थी; पर अभी वह उस अवसर की तलाश में था, जब उसे कुछ कर दिखाने का अवसर मिले, अधिकार मिले। वह ऐसे घोड़े पर बैठना पसंद नहीं करता था, जिसकी लगाम दूसरों के हाथ में हो।

उपप्राचार्य पद पर पहुँचने के बाद और अपनी योग्यता से व्यवस्थापिका समिति की नजरों में चढने के उपरान्त प्रो. ज्ञान ने शिक्षा मंत्री से लेकर शिक्षा शास्त्रियों तक सभी को एक ज्ञापन लिखकर भेजा, जिसमें उसने लिखा कि - ''आज के होनहार बालक ही तो कल के भारत के भाग्य विधाता, राष्ट्र के नायक और देश के भावी कर्णधार बनने वाले हैं। इन हरे बांस की भाँति मनचाहे मुड़ने योग्य, कोमलमति नन्हे-मुन्ने बालकों के चरित्र निर्माता, उनमें नैतिकता के बीज बोने वाले गुरुजन कैसे होने चाहिए। वर्तमान संदर्भ में यह बात गम्भीरता से विचारणीय है।

वर्तमान में प्राथमिक शालाओं के अधिकांश अध्यापक बहुत साधारण योग्यता के होते हैं। न उनका कोई अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व, न उनमें कोई प्रतिभा। वस्तुत: उनमें से अधिकांश में तो गुरु बनने जैसा गौरव ही नहीं होता।

उन्हें न्यूनतम योग्यता के आधार पर नियुक्तियाँ दे दी जाती हैं। यही एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें सबसे कम भीड़ है। जब कहीं काम नहीं मिलता तो लोग यहाँ आते हैं।

आप स्वयं ही सोचे कि छँट-छँटकर बचे हुए लोग कैसे होते होंगे ? क्या ऐसे व्यक्तियों को उन कोमलमति बालकों के गुरुत्व का गुरुत्तर भार सौंपा जा सकता है ? नहीं, कदापि नहीं। पर, सौंप दिया जाता है।

सौंपने के बाद यह देखने की फुरसत भी किसी को नहीं मिलती कि उन बालकों के बहुमूल्य जीवन के साथ क्या/कैसा खिलवाड़ हो रहा है ?

उन अध्यापकों में भी अधिकांश को तो अपने साइड बिजनेस - पार्ट टाइम जॉब और गाँवों में पंचों-सरपंचों तथा अधिकारियों के आगे-पीछे फिरने के कारण बालकों को पढाने का समय ही नहीं मिलता। वे खुशामद न करें तो नौकरी सुरक्षित कैसे रह सकेगी ? उन्हें पढाने-लिखाने में उत्साह भी नहीं होता; क्योंकि उनमें न वैसी योग्यता है और न वैसी रुचि।

जिनका वेतन बैंक के चपरासियों से भी कम हो, उन पदों पर कोई खास मजबूरी के बिना प्रतिभाशाली बुद्धिमान व्यक्ति क्यों आयेगा ? जबकि शिक्षण के क्षेत्र में सर्वाधिक बुद्धिमान और प्रतिभावान व्यक्ति आना चाहिए; क्योंकि अध्यापक न केवल अक्षर ज्ञान देनेवाला एक सामान्य व्यक्ति होता है, बल्कि वह बालकों के चतुर्मुखी व्यक्तित्व का विकास करने वाला एवं उनके चरित्र का निर्माता भी होता है।

यदि एक इंजीनियर भूल करेगा तो कोई बड़ा अनर्थ होने वाला नहीं है, उसकी भूल से कुछ मकान, पुल या बांध ही ढहेंगे, एक डॉक्टर भूल करेगा तो भी कोई बड़ी हानि नहीं होगी, केवल थोड़े से बीमार ही परेशान होंगे, एक मैनेजर भूल करेगा तो कोई कलकारखाना या मिल ही घाटे में जायेगी और कोई सी.ए. भूल करेगा तो थोड़ा-बहुत हिसाब ही गड़बड़ाएगा; परन्तु यदि अध्यापक भूल करेगा तो पूरे राष्ट्र का ढाँचा ही चरमरा जायेगा; क्योंकि अध्यापक भारत के भावी भाग्य-विधाताओं के चरित्र का निर्माता है, कोमलमति बालकों में नैतिकता के बीज बोने वाला और अहिंसक आचरण तथा सदाचार के संस्कार देने वाला उनका गुरु है। अत: उसे न केवल प्रतिभाशाली, बल्कि सदाचारी और नैतिक भी होना चाहिए।

गुरु जैसे गरिमामयी पद पर सामान्य व्यक्तियों को नहीं चुना जाना चाहिए। डॉक्टरों और इंजीनियरों से अधिक महत्वपूर्ण स्थान अध्यापकों को मिलना चाहिए और इस क्षेत्र में उनसे भी कहीं अधिक प्रतिभाशाली और बुद्धिमान व्यक्तियों का चयन होना चाहिए; क्योंकि यहाँ भौतिक वस्तुओं के बिगड़ने-सुधरने की बात नहीं है, यहाँ तो चेतन-आत्माओं को संस्कारित करने का महत्वपूर्ण प्रश्न है।

एतदर्थ डॉक्टरों, इंजीनियरों जैसी ही सब सुविधायें और आकर्षक वेतनमान अध्यापक को भी आवश्यक है, अन्यथा अच्छे

प्रतिभाशाली लोग इस क्षेत्र में नहीं आयेंगे। कम से कम प्रथम श्रेणी से नीचे स्तर के व्यक्ति को तो अध्यापक होना ही नहीं चाहिए।

पर पता नहीं शासन क्या सोचता है ? वह शिक्षा के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में सबसे निम्न स्तर के लोगों को क्यों ले लेता है ? जो अन्य किसी काम के योग्य नहीं माने जाते। न जाने उन्हें छोटे–छोटे बालकों को अध्यापन के योग्य क्यों मान लिया जाता है ? जबकि इन्हें तो अत्यन्त कुशल, मनोवैज्ञानिक, मननशील और जागरूक अध्यापकों की आवश्यकता है।''

प्रस्तुत ज्ञापन द्वारा ज्ञान ने बड़ी विनम्रता से दृढ संकल्प के साथ शासन का ध्यान इस ओर आकर्षित किया।

यदि शिक्षा विभाग ने ज्ञान के इस ज्ञापन पर ध्यान दिया तो निश्चित ही शिक्षण–संस्थाओं का कायाकल्प हो सकता है।

जो भी संगठन, संस्था या व्यक्ति अपने पसीने की कमाई से प्राप्त धन का सदुपयोग करके शिक्षाकेन्द्र स्थापित करता है, वह उसके माध्यम से कोई ऐसा लोक–कल्याणकारी कार्य करना चाहता है, जिससे आगामी पीढी का लौकिक और पारलौकिक जीवन सुखी हो।

यदि उसका यह प्रयोजन पूरा न हो तो केवल अर्थकारी लौकिक शिक्षा के लिये वह इतना भारी खर्च वहन क्यों करे ? और इतनी भारी व्यवस्था का भार भी अपने ऊपर क्यों ले ? वह काम तो शासन स्वयं ही करता है और शासन उसके लिए प्रतिबद्ध भी है।

निजी संस्थाओं की रीति–नीति और उद्देश्यों से शासन न तो कभी अनभिज्ञ ही रहा है और न भ्रमित ही। फिर भी शासन अधिकतम निजी शिक्षा केन्द्रों की स्थापना और संचालन को प्रोत्साहित करता है। न केवल प्रोत्साहित करता है, बल्कि उन्हें अधिकतम अनुदान भी देता है।

इससे स्पष्ट है कि शासन न तो नैतिक शिक्षा, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का विरोधी है और न अहिंसक आचरण एवं आध्यात्मिक विचारों का निषेधक।

यदि कोई शिक्षा–संस्था लौकिक पढाई के साथ छात्रों में सदाचार के संस्कार डालने का महान कार्य करती है, उनमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता का बीजारोपण करती है, उन्हें नैतिकता का पाठ पढाती है, भगवान महावीर जैसे परम पुरुष के द्वारा निरूपित अहिंसा और अपरिग्रह के संदेश द्वारा देश में शांति और समाजवाद लाने का वातावरण बनाती है, तो वह राष्ट्रोन्नति में प्रशंसनीय और अभिनन्दनीय सहयोग ही तो करती है।

भला, ऐसे कार्यों में शासन को ही क्या, किसी भी जाति या वर्ग को क्या विरोध हो सकता है ? यदि ऐसा करने में कोई संस्थान या अधिकारी संकोच करता है या हाथ खींचता है सो यह तो उसकी स्वयं की ही कमजोरी है, इसमें शासन का कोई दोष नहीं है।

पर पता नहीं, अभी तक हमारी अधिकांश निजी शिक्षा–संस्थायें अपने इन उद्देश्यों में सफल क्यों नहीं हो पायी है ? वे अपने मन ही मन भले ही खुश हो लें कि वे शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ उल्लेखनीय कार्य कर नहीं हैं, पर जो कुछ भी वे वर्तमान में कर रही हैं, उसमें शासन का बोझ अपने माथे पर ढोने के सिवाय समाज का अपना कुछ भी नहीं है।

इस संदर्भ में ईसाई मिशन की शिक्षा–संस्थाओं से प्रेरणा ली जा सकती है। वे उत्तम शिक्षण के साथ छात्रों में ईसाई संस्कृति के संस्कार डालने से कभी नहीं चूकती।

यद्यपि सुदर्शन के पिता नगर के नामी एडवोकेट थे और उनकी वकालत भी सबसे अच्छी चलती थी, पर वे नहीं चाहते थे कि उनका बेटा सुदर्शन भी वकालत का ही व्यवसाय करे; क्योंकि उन्हें इस बदनाम सुदा व्यवसाय से घृणा हो गई थी।

(क्रमशः)

प्रशिक्षण शिविर की तैयारियाँ संपन्न

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ जैन बोर्डिंग हाउस, रेलवे रोड़ पर मेरठ के जैन समाज की एक सामूहिक बैठक संपन्न हुई, जिसमें दिनांक 24 मई से 10 जून तक चलने वाले शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया।

इस अवसर पर श्री अजयजी जैन ने शिविर में चलने वाले विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा समाज के सामने रखी। उन्होंने बताया कि इस दौरान होने वाले प्रवचनों व कक्षाओं के अलावा इन्द्रसभा, भगवान का पालना और अनेक प्रतियोगितायें भी होंगी। साथ ही तीरगरान स्थित श्री जैनधर्म शिक्षा सदन का स्वर्ण जयंती महोत्सव भी शिविर के दौरान ही मनाया जायेगा। साथ ही घटयात्रा व रथयात्रा भी निकलेगी।

शिविर समिति के चैयरमेन श्री सुरेशजी जैन ऋतुराज ने शिविर के आयोजन की तैयारियों की जानकारी देते हुये आयोजन की विभिन्न व्यवस्थाओं की अलग–अलग समितियों की घोषणा की। युवा कवि निशान्त जैन ने सभी साधर्मियों से शिविर का अधिकाधिक लाभ लेने की अपील की।

सभा में जैन समाज के सभी प्रमुख महानुभाव – श्री नवीन जैन (जैना ज्वेलर्स), श्री मूलवर्धन जैन, श्री मुकेश जैन, श्री पंकज जैन, श्री विजय जैन, श्री सुनील जैन, श्री प्रेमचंद जैन, श्री रवीन्द्र जैन, श्री हंसकुमार जैन, श्री मनोज जैन, श्री प्रभाष जैन, श्री रोहित जैन आदि उपस्थित थे। संचालन शाखा के मंत्री श्री सौरभ जैन ने किया।

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - *(नवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा – ***यदि मैं अपने आपको मनुष्य मानकर सम्पूर्ण मानव जीवन के हित के लिये अपने आज की सुखसुविधा और मौजमस्ती को तिलांजलि दे सकता हूँ तो क्या अपने आगामी अनंतकाल के हित के लिये इस मानव जीवन की आज की मौजमस्ती नहीं छोड़ सकता ?***

पर इसके लिये संशय रहित होकर दृढतापूर्वक यह तय करना होगा कि ''आखिर मैं हूँ कौन''

अब आगे पढिये –

जब अपनी ''मैं'' की परिभाषा बदलने से इतना सब कुछ बदल जाता है तब क्यों नहीं हमने आज तक अपनी ''मैं'' की परिभाषा सुनिश्चित करने की कोशिश की ?

अब यह तथ्य तो स्थापित हो ही गया है न कि ***अपनी ''मैं'' की परिभाषा सुनिश्चित होने पर ही हमारे ''सुख–दुःख और हित–अहित परिभाषित हो सकेंगे, सुनिश्चित हो सकेंगे और मात्र तब ही हम अपने उस हितसाधन हेतु प्रयत्न कर सकेंगे।***

मुझे समझ ही नहीं आता है कि हम हैं कैसे लोग ? हम कर क्या रहे हैं ?

जब हमारे हित–अहित ही सुनिश्चित नहीं हैं तब हम कर क्या रहे हैं ? यह सारी भागदौड़ है किसलिये ?

क्या इस भागदौड़ से पहिले अपने लक्ष्य निर्धारित करना जरूरी नहीं ? ''मैं'' को पहिचानना जरूरी नहीं ? उस ''मैं'' के अपने हित–अहित पहिचानना आवश्यक नहीं ? ''सुख–दुःख'' परिभाषित करना जरूरी नहीं ? तो क्या हम अपना लक्ष्य तय किये बिना ही दौड़ पड़ते हैं, दौड़ते ही रहते हैं, यहाँ से वहाँ ?

इस पर भी हम अपने आपको पढा लिखा कहते हैं और बुद्धिमान मानते हैं ?

जब यही सब मालूम नहीं है तो फिर एक बार वही सवाल कि ''आखिर हम कर क्या रहे हैं ?''

अपनी एक अप्रकाशित रचना में मैंने लिखा है –

''अनजाने में बस गतिशीलता ही हमारे जीवन का लक्ष्य बन गई है, आदर्श बन गई है, बिना रुके बिना थमे, बस दौड़ते रहना, किसलिये ? यह कोई नहीं जानता .....

दरअसल न तो चलना महत्वपूर्ण है और न ही रुक जाना, महत्वपूर्ण है। साध्य की सिद्धि, साध्य भी अचिन्त्य व अदृश्य नहीं वरन सुविचारित और स्पष्ट''

एक सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार ने भी लिखा है – ***''पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहिचान कर ले''***

अब यह एक स्थापित तथ्य है कि चलने से पूर्व हमें अपना लक्ष्य मालूम होना जरूरी है और लक्ष्य तय करने से पूर्व यह पहिचानना आवश्यक है कि आखिर ''मैं हूँ कौन'' क्योंकि मैं की परिभाषा के अनुसार ही मात्र हमारे हित–अहित और सुख–दुःख ही नहीं वरन हमारे लक्ष्य भी बदल जाते हैं।

यदि हम मानते हैं कि मैं मानव हूँ, तब सम्पूर्ण मानवता के उत्थान में ही हमें अपना हित दिखाई देता है और हमारे चिंतन का विषय देश–काल की मर्यादा से निरपेक्ष और जाति–धर्म के भेदभाव से रहित सम्पूर्ण मानवता बन जायेगी।

यदि हम अपनी ''मैं'' की परिभाषा बदलकर ''मैं हिन्दुस्तानी'' कर दूं तो क्या होगा ?

तब भी क्या सम्पूर्ण मानवता का उत्थान ही मेरा लक्ष्य बना रहेगा ?

नहीं !

अब मेरी मानवता देश की सीमा में बंट जायेगी, **अब हिन्दुस्तान का उत्थान मेरा लक्ष्य होगा, इसी में मुझे अपना हित दिखाई देगा, इसी में मुझे सुख मिलेगा।**

हिन्दुस्तान के अतिरिक्त अन्य देशों के नागरिक जो मानव होने के नाते मेरी ''मैं'' की परिभाषा में शामिल थे अब ''मैं '' नहीं रहेंगे, अब वे पराये हो जायेंगे, अब मुझे उनकी तरक्की और सुख–सुविधा की चिन्ता नहीं रहेगी। अब तो वे मेरे प्रतिद्वन्दी हो जायेंगे, क्योंकि अब मेरे और उनके बीच हितों का टकराव होाग।

यदि मैं अपने आपको हिन्दुस्तानी की जगह ''मैं राजस्थानी'' मानने लगूं तो क्या होगा ?

अब सारे राजस्थानी मेरे अपने हो जायेंगे और उनके हित मेरे हित होंगे व राजस्थानियों के अलावा अन्य सभी प्रान्तों के हिन्दुस्तानी अब पराये हो जायेंगे और मैं राजस्थानियों के हितों की रक्षा के लिये उनके विरुद्ध संघर्ष करने को प्रेरित होने लगूंगा। है न विचित्र बात !

अपने आपको मानव और हिन्दुस्तानी मानकर कल तक जिनके हित के लिये मैं मरमिट जाना चाहता था, आज अपने आपको राजस्थानी मानने पर सम्पूर्ण राजस्थानियों के हितों की रक्षा के लिये उन अन्य हिन्दुस्तानी मानवों के साथ मरने–मारने पर उतारू हो जाता हूँ।

अरे ! अपने आप को हिन्दुस्तानी मानने वाला एक सैनिक अपने हिन्दुस्तान के हितों की रक्षा के लिये अपनी जान गंवाने से भी नहीं हिचकता है और जब वही अपने आपको 'अ–ब–स' नाम वाला एक व्यक्ति **(an individual)** मानने लगता है तो फिर अपने क्षुद्र से स्वार्थ की पूर्ति हेतु अपने देश को लूटने और बेचने को भी तैयार हो जाता है।

जरा विचार तो कीजिये कि देश के लिये लड़ने–मरने वाले उस सैनिक के मन में यदि यह विचार आ जाये कि –

''अरे मैं तो रामलाल हूँ, दो मासूम बच्चियों का बाप, एक अबला

का पति और अपने इस छोटे से, प्यारे से परिवार का एकमात्र सहारा और अगर मैं मर गया तो ? तो इन मेरे अपनों का क्या होगा, ये देश मेरे किस काम आयेगा ? यहाँ मेरा कौन है ?''

तब भी क्या वह उसी तरह देश के लिये मर सकेगा ?

अरे ! मरना तो दूर, तब तो हो न हो, वह अपने परिवार की खुशहाली के लिये देश के हितों की कुर्बानी करने पर तक उतारू हो जाये।

यही फर्क तो है सीमा पर तैनात उस सैनिक के और हमारी सोच में और इसीलिये हमारे और उसके व्यवहार में इतना बड़ा अन्तर है, **वह अपने आपको हिन्दुस्तानी मानता है और इसीलिये अपने हिन्दुस्तान की रक्षा के लिये अपनी जान दे देता है और हम अपने आपको एक व्यक्ति मानते हैं और इसलिये अपने व्यक्तिगत हितों के लिये देशहित को ताक पर रख देते हैं।**

हमारी ये सब प्रवृत्तियाँ – टेक्स चोरी, रिश्वतखोरी हमारे इसी सोच के परिणाम हैं।

यह इतना बड़ा फर्क कैसे पड़ गया ? क्या बदल गया है ?

और कुछ भी तो नहीं, सिर्फ ''मैं'' की परिभाषा ही तो बदली है, बस !

उपरोक्त अनेकों उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही सब कुछ बदल जाता है, ***जब ''मैं'' की परिभाषा हमारे ऊपर इतना बड़ा प्रभाव डालती है तो अपनी ''मैं'' की दोष रहित, निर्विवाद परिभाषा खोजें, समझें और स्थापित करें ? इसमें देरी क्यों ?***

हमारा अपने आपको न पहिचानना और मेरी अपनी ''मैं'' की परिभाषा सुनिश्चित और सुपरिभाषित न होना हमें अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में भी किस प्रकार हास्यास्पद स्थिति ला खड़ा करता है, यह जानने के लिये पढें अगली किश्त... ***(क्रमश:)***

मेरठ में बालकों हेतु विशेष कक्षायें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 49वें वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर मेरठ (उ.प्र.) में दिनांक 24 मई से 10 जून 2015 तक बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञा एवं विविध बाल साहित्य की रचयिता डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा बालकों के लिये विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। अधिक से अधिक बालक इस अवसर का लाभ लेवें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 अप्रैल	दिल्ली	उपकार दिवस व मुमुक्षु मण्डल दिल्ली का स्वर्ण जयंती समारोह
17 से 21 अप्रैल	मंगलायतन	गुरुदेवश्री जयन्ती
26 अप्रैल से 2 मई	सोलापुर	इन्द्रध्वज विधान
17 से 22 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण–शिविर
11 जून से 15 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

चलो मेरठ ! चलो मेरठ !! चलो मेरठ !!! चलो मेरठ !!!! चलो मेरठ

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 39वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

रविवार, दिनांक 31 मई 2015

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 39वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन रविवार दिनांक 31 मई को दोपहर 2 बजे मेरठ में होने जा रहा है।

फैडरेशन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को आह्वान है कि वे अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

आवास एवं भोजन व्यवस्था नि:शुल्क।

अपनी गतिविधियों की रिपोर्ट शीघ्र भेज दें

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सभी सदस्यों व पदाधिकारियों से अनुरोध है कि वे वर्ष के दौरान किये गये अपने कार्यों के एक विस्तृत विवरण, दिनांक 30 अप्रैल तक हमारे केन्द्रीय कार्यालय, जयपुर को अवश्य भेज दें, ताकि आगामी अधिवेशन में पुरस्कृत किये जाने हेतु उनके नाम पर विचार किया जा सके। ज्ञातव्य है कि अधिवेशन के अवसर पर निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे –

(1) पाठशाला संचालन हेतु, (2) स्वाध्याय संचालन हेतु, (3)तीर्थयात्रा हेतु, (4) प्रतिमाह नियमित मीटिंग हेतु, (5) नई पाठशाला स्थापना हेतु, (6) प्रगति विवरण भेजने हेतु, (7) नई शाखा स्थापना हेतु, (8) ''आवो मारी साथे'' योजना क्रियान्वयन हेतु, (9) सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु, (10) साहित्य बिक्री केन्द्र संचालन हेतु, (11) प्रशिक्षणार्थी भेजने हेतु, (12) महाविद्यालय में पढने के लिये छात्र भेजने हेतु, (13)निबन्ध प्रतियोगिता के विजेता, (14) वक्तृत्व प्रतियोगिता के विजेता, (15) विशिष्ट उपलब्धियों हेतु।

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (महामंत्री)

आगामी कार्यक्रम...

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ दिनांक 3 से 8 मई तक 25वें बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर चैतन्य विद्या निकेतन में प्रवेश प्रक्रिया भी संपन्न होगी। प्रवेश फार्म भरने की अन्तिम तिथि 10 अप्रैल है। इस विद्यालय में कक्षा 8 से अंग्रेजी व गुजराती माध्यम में प्रवेश दिया जायेगा।

संपर्क सूत्र – सचिन जैन, मो. 09409274126

शिक्षण शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ साहिबाबाद स्थित दि.जैन मंदिर वसुन्धरा में अ. भा.दि. जैन विद्वत्परिषद के तत्वावधान में 28 से 30 मार्च 2015 तक त्रिदिवसीय शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय मंत्री डॉ. अशोकजी गोयल की 'जैनदर्शन में कर्मसिद्धांत' विषय पर सायंकाल 7 से 9 कक्षायें आयोजित हुईं।

शिविर के संयोजक एम.पी. जैन इन्द्रापुरम थे। **– अखिल बंसल**

विगत 46 वर्षों से निरन्तर, प्रतिवर्ष पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित –

अनूठे ''वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण शिविर'' क्या हैं ये प्रशिक्षण शिविर ?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

● देशभर में अब तक 48 प्रशिक्षण शिविर संपन्न ● 9800 से अधिक शिक्षक प्रशिक्षित ● बाल शिक्षण के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति

यदि आप भी चाहते हैं कि –

- **आपके बालकों का जीवन भी सदाचारमय हो**
- **आपके बालकों को भी जैनधर्म का प्राथमिक ज्ञान हो**
- **आपके बालक धार्मिक संस्कारों से सम्पन्न हों**
- **आपके घर या नगर में धार्मिक शिक्षण हेतु पाठशाला संचालित हो**
- **आपके बालक को जीने के लिये सामाजिक विकृतियों के दूषण से रहित एक पृथक समाज मिले**

तो आइये प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कीजिये। ***(यह आवास एवं भोजन की व्यवस्था सहित सम्पूर्णत: नि:शुल्क है)***

''वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण शिविर'' अन्य अनेकों शिविरों के समान कोई सामान्य शिविर नहीं है, वरन ये ऐसे ***अतिविशिष्ट प्रशिक्षण शिविर हैं, जिनमें किसी भी सामान्य मुमुक्षु को इस कला में प्रशिक्षित किया जाता है कि किस प्रकार कोमलमति बालकों को भी थोड़े से समय में, सुरुचिपूर्ण ढंग से, न केवल सात्विक, धार्मिक संस्कार दे दिये जाएँ; अपितु उन्हें जैनदर्शन का सामान्य एवं गहन अध्ययन भी इस प्रकार करवा दिया जाये कि उन्हें कोई शंका न रहे और उनमें उक्त विषय को और अधिक गहराई से जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हो जाये, वह भी मात्र 18 दिनों में।***

शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रशिक्षित व्यक्ति इस योग्य हो जाता है कि वह अपने गाँव–नगर या गली–मौहल्ले के जिनमंदिर में या किसी के घर पर ही ***''श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला''संचालित कर सके और उनमें शिक्षण कर सके और इसप्रकार अनेकों लोगों में धार्मिक संस्कार सिंचन करने और आत्मकल्याण में निमित्त बन सके।***

प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि प्रशिक्षणार्थी को बालबोध पाठमालाओं का सामान्य ज्ञान हो और **वे पूरे 18 दिन शिविर में भाग लेकर सभी कक्षाओं में सम्मिलित हों।**

यदि आप स्वयं उक्त प्रशिक्षण शिविरों में सम्मिलित होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर लें या अपने नगर के अन्य रुचिवंत भाई–बहिनों को इन शिविरों में भेजकर प्रशिक्षण दिलवाने की व्यवस्था कर दें तो आपको अपने ही कोमलमति बालकों को जैनदर्शन का परिचय करवाने के लिये बाहर से विद्वान बुलाने की और उन पर ही निर्भर बने रहने की विवशता नहीं रहेगी, आपके स्वयं के घर, मौहल्ले या शहर में यह सुविधा सहज ही उपलब्ध हो जायेगी।

यदि हम मोटे तौर पर बात करें तो कह सकते हैं कि ***शिक्षण से हमें ज्ञान प्राप्त होता है और प्रशिक्षण से दक्षता।***

सामान्य विषयों का तो हमें सामान्य ज्ञान होना ही पर्याप्त है, हमें हर विषय में दक्ष होना आवश्यक नहीं है, पर **प्रयोजनभूत विषयों में मात्र सामान्यज्ञान से काम नहीं चल सकता है, प्रयोजनभूत विषयों में हमें दक्षता आवश्यक है और दक्षता आती है प्रशिक्षण से।**

सामान्यतौर पर असंभव से लगने वाले कार्य भी योग्य प्रशिक्षण पाकर सरलता से सम्पन्न किये जा सकते हैं। हम कह सकते हैं कि **शिक्षण एक कला है और प्रशिक्षण उस कला का विज्ञान।** हमारा दिन–प्रतिदिन का अनुभव है कि सामान्य तौर पर जो बात किसी को समझाई और मनवाई नहीं जा सकती है, वही बात अनुभवी लोग अपनी कुशलता से किसी से भी सामान्य ढंग से ही स्वीकृत करवा लेते हैं।

जो कार्य लौकिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकार बी.एड. के माध्यम से 1 वर्ष में सम्पन्न करवाती, वही कार्य धार्मिक शिक्षण के क्षेत्र में हम मात्र 18 दिन में सम्पन्न कर लेते हैं, वह भी बिलकुल नि:शुल्क। इन 18 दिवसीय शिविरों में सहभागी लोगों को हर स्तर पर जैनदर्शन का सामान्य शिक्षण तो दिया ही जाता है, साथ ही **विशिष्ट विषयों को, विशिष्ट शैली में समझाने, पढाने और याद तक करवा देने का प्रशिक्षण भी वैज्ञानिक विधि से दिया जाता है।**

यदि आप चाहते हैं कि आपके नगर में भी नियमित तौर पर **''श्री वीतराग–विज्ञान पाठशालाएं''** संचालित हों और आपके अपने बालक, आपके गली–मौहल्ले और नगर के बालक तीर्थंकरों–गणधरों द्वारा प्रदत्त इस वीतरागी तत्त्वज्ञान से परिचित हों तो अवश्य ही स्वयं इन प्रशिक्षण शिविरों में सम्मिलित हों और अन्य लोगों को भी इनमें सम्मिलित होने के लिये प्रेरित करे।

अन्य आकर्षण –

– प्रतिदिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक मूर्धन्य विद्वानों के प्रवचनों का लाभ

– अनुभवी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर अनेक प्रौढ एवं बाल कक्षाओं का लाभ

– प्रतिदिन प्रात: विशाल पैमाने पर सामूहिक पूजन का आयोजन

– प्रतिदिन सायंकाल भावपूर्ण जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन

– प्रतिदिन विभिन्न आध्यात्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

– प्रतिदिन प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक सभी आयुवर्ग के लोगों के लिये अनेक आध्यात्मिक प्रवचन एवं शैक्षणिक कार्यक्रम

– अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन

– श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का सम्मेलन एवं विद्वत्गोष्ठी

– अ. भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग

– प्रेरक प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन

– अत्यल्प कीमत पर विपुल सत्साहित्य की उपलब्धि

– आगंतुक धर्मप्रेमियों हेतु नि:शुल्क भोजन एवं आवास की व्यवस्था

आगामी प्रशिक्षण शिविर दिनांक 24 मई से 10 जून तक मेरठ (उ.प्र.) में भाग लेने के लिये सम्पर्क सूत्र :–

(1) पण्डित सोनू शास्त्री, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन–09785643277, 0141–2705581, 2707458 Email - ptstjaipur@yahoo.com

(2) सौरभ जैन (मंत्री), शिविर आयोजन समिति, नवकार टेक्सटाइल, 74, खंदक बाजार, मेरठ (उ.प्र.) फोन–09897241464; आवास हेतु संपर्क – अंबुज जैन, मोबा. 09837020293

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर (रजि.) द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

(अध्यात्म के विशुद्ध प्रचार–प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का अग्रणीय छात्रावास)

7 वीं कक्षा पास प्रतिभाशाली बालकों के लिए स्वर्णिम अवसर !

कक्षा 8वीं से कक्षा 12वीं तक पंचवर्षीय पाठ्यक्रम

साक्षात्कार शिविर : 23 से 26 अप्रैल 2015 तक

- लौकिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
- अंग्रेजी, सेमी अंग्रेजी माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि विषयों की कोचिंग सुविधा
- व्यक्तित्व–विकास के लिए सप्ताहिक संगोष्ठी, पुस्तकालय, योगा, खेलकूद भ्रमण एवं शिविर का आयोजन

प्रवेश प्रक्रिया :– कक्षा 7वीं में 60% से अधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी 5 अप्रैल 2015 तक अंकसूची की प्रतिलिपि सहित प्रवेशफार्म कार्यालय में अवश्य जमा करावें एवं 23 से 26 अप्रैल 2015 तक संस्था द्वारा आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालकों के साथ अनिवार्यरूप से उपस्थित होवें।

आदिनाथ नखाते (अध्यक्ष)	07709479765
अशोक जैन (मंत्री	07588740963
नरेश जैन (संयोजक)	09373100022
प्रियदर्शन जैन (उपसंयोजक)	09881598899
डॉ.राकेश जैन शास्त्री (निर्देशक)	09373005801
पण्डित विपिन जैन शास्त्री (प्राचार्य)	09860140111
पण्डित मनीश जैन शास्त्री (अधीक्षक)	08087216959
पण्डित आशीश जैन शास्त्री (अधीक्षक)	09028601331
पण्डित सुदर्शन जैन शास्त्री (प्रबंधक)	09403646327

प्रतिभा पात्रता

प्रथम श्रेणी में
7वीं कक्षा पास
जैनधर्म के संस्कारों
को पालने में अभिरूचि

निवेदक – श्री महावीर विद्या निकेतन

नेहरू पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर – 440002 (महाराष्ट्र) फोन नं. **0712-2765200, 6959257**

अधिक जानकारी हेतु **Log in** करें **www.vidyaniketan.weebly.com**

E-mail. shreemahavirvidyaniketan@gmail.com

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्‌गार –

समाज के सर्वमान्य नेता **साहू शान्तिप्रसादजी जैन** ने निम्नलिखित उद्‌गार व्यक्त किये हैं –

''स्वामीजी ने वीतराग धर्म का प्रचार-प्रसार करके जैनधर्म व समाज का बहुत बड़ा उपकार किया है। वास्तव में सम्यग्दर्शन-ज्ञान व चारित्रधर्म की पुन: स्थापना में उनका बहुमूल्य स्थान रहा है, जिसका जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा।''

भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, बम्बई के अध्यक्ष **सेठ लालचन्द हीराचन्द** लिखते हैं-

''संत श्री कानजीस्वामी ने जैन समाज में नई जागृति और नव चैतन्य का निर्माण किया है। समाज में फैली हुई अनुचित रूढियों और अन्य प्रकार विशेषत: मिथ्या तत्त्वज्ञान के बारे में आपका प्रचार बहुत ही प्रभावशील हो रहा है। स्वामीजी जो समाज को मार्गदर्शन कर रहे हैं, उसके लिये उनका अभिनन्दन है। आशा है समाज को उनका बहुत दिनों तक नेतृत्व मिलेगा।''

प्रसिद्ध उद्योगपति **साहू श्रेयांसप्रसादजी जैन** लिखते हैं –

''आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व भगवान कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने जिस मोक्षमार्ग का उपदेश दिया व मुक्ति के मार्ग का मर्म समझाया, उस मार्ग को वर्तमान युग में स्वधर्मी भूले हुये थे व अंधकार में भटक रहे थे। अब दो हजार वर्ष बाद पूज्य कानजीस्वामी ने उसी मोक्षमार्ग का अनुसरण कर हमें मुक्ति का मार्ग दर्शाया है, जिसके लिये समस्त दिगम्बर जैन समाज ऐसे महान संत का सदैव ऋणी रहेगा।''

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त
महाविद्यालय में प्रवेश पाने हेतु –
चलो मेरठ ! चलो मेरठ !! चलो मेरठ !!! चलो मेरठ !!!! चलो मेरठ

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण और प्रशिक्षण शिविर

के अवसर पर : दिनांक 24 मई से 10 जून 2015
योग्यता :– 60 प्रतिशत से अधिक नम्बरों के साथ दसवीं कक्षा उत्तीर्ण
– डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सानिध्य में रहकर 5 वर्षों तक जैनदर्शन का तलस्पर्शी मर्म समझने का स्वर्ण अवसर
– मात्र 5 वर्ष में जैनधर्म के आधिकारिक विद्वान बनें
– स्वयं स्वाध्याय कर आत्मकल्याण करें, समाज को आत्मकल्याणकारी धर्म के मार्ग पर लगायें
– सरकारी मान्यता प्राप्त स्नातक डिग्री (''शास्त्री'' BA के समकक्ष)
– आगे उच्च (सर्वोच्च) शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध
– शिक्षण के क्षेत्र में सुनहरे अवसर
– सम्पूर्ण 5 वर्ष तक आवास एवं भोजन नि:शुल्क
– विगत 38 वर्षों से कार्यरत जैन समाज का अग्रणीय संस्थान
– अब तक लगभग 700 स्नातक, सभी उच्च पदस्थ
– विशाल शिक्षण संस्थानों के संचालन में रत
– विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्कूलों में प्रोफेसर, लेक्चरर और शिक्षक पदों पर कार्यरत

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127